International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 75-78

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका

रिंकू मीना*

सार

ग्रामीण महिलाएं समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो अक्सर विभिन्न चुनौतियों का सामना करती हैं। जैसेः– शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य एवं पोषण की, आर्थिक गतिविधियों में कम भागीदारी आदि। ग्रामीण महिलाओं के महत्व को देखते हुए सरकार ने इनकी स्थिति में सुधार हेतु अनेक योजनाएं चलाई हैं। ये योजनाएं ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर मजबूत बना रही हैं। इन योजनाओं के कारण ग्रामीण महिलाएं अपने अधिकारों और संभावनाओं को पहचान कर अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आदि के तहत महिलाओं के ऋण और सब्सिडी मिलती रही है और वे छोटे व्यवसाय भुरू कर रही हैं। सरकार द्वारा चलाए जा रही विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं अभियानों के कारण ग्रामीण महिलाओं कन्या भूर्ण हत्या, कुपोषण में कमी आ रही है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और कौशल भारत मिशन के माध्यम से महिलाओं को शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जिससे वे आत्मनिर्भर बन सके। सरकार ने पंचायती राज अधिनियम के तहत महिलाओं को स्थानीय सरकारों में प्रतिनिधित्व देने के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है, जिससे ग्रामीण महिलाओं की राजनीति में सक्रिय भागीदारी बढ़ रही हैं। हालांकि ग्रामीण महिलाओं में सरकारी योजनाओं की जानकारी की कमी, पारम्परिक सोच और समाज में महिलाओं की भूमिका के बारे मे पूर्वाग्रह, ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव, जैसे इंटरनेट, परिवहन और स्वास्थ्य सेवाएं एवं योजनाओं के आवेदन और लाभ प्राप्त करने की जटिल प्रक्रिया उन्हें योजनाओं का लाभ उठाने में बाधक बने हुए है। इन कारणों को दूर करने के लिए जागरूकता बढ़ाने, शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों में सुधार और स्थानीय प्रशासन की मदद से महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण महिलाओं का समुचित विकास हो सके।

शब्दकोशः *ग्रामीण महिलाएं, सरकारी योजनाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक आत्मनिर्भरता, राजनीति भागीदारी।*

प्रस्तावना

भारत एक ग्रामीण सभ्यता वाला देश है जहां दो–तिहाई लोग गांवों में निवास करते हैं। गांवों में निवास करते हैं ग्रामीण महिलाओं को ग्रामीण समाज का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है। वैदिक काल की सभ्यता भी ग्रामीण सभ्यता थी, इस काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी, इस काल में महिलाओं को पुरूषों

* शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

के सम्मान अधिकार प्रदान दे जैसे शिक्षा, वर चुनने, धार्मिक अधिकार आदि। उत्तर वैदिक काल के बाद से निरंतर महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने शुरू हुई। जिसके कारण ग्रामीण सभ्यता में अनेक कुप्रथाओं का जन्म हुआ जैसेः– प्रदा प्रथा, दहेज प्रथा, लैगिक भेदभाव आदि। पिछले कुछ दशकों में सरकार ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए कई योजनाएं लागू की हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप सशक्त बनाना है।

समाजिक सशक्तीकरण से संबंधित सरकारी योजनाएं

ग्रामीण महिलाएं सामाजिक आधार पर बहुत अधिक पिछड़ी हुई है। इसलिए सरकार द्वारा इनके सामाजिक विकास हेतु अनेक योजनाएं चलाई ताकि इनमें आत्म–साक्षात्कार की शक्ति दी जा सके। और उन्हें आर्थिक, सामाजिक और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव से मुक्ति दिलाई जा सके।

सरकार ने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, आंगनबाड़ी सेवाएं, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, सुरक्षित मातृत्व कार्यक्रम और स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम आदि के तहत गर्भवती महिलाओं को गर्भधारण के दौरान और प्रसव के बाद वित्तीय सहायता, निःशुल्क स्वास्थ्य जांच, दवाइयां एवं उचित पोषण एवं विशेष आहार प्रदान किये जा रहे हैं। सरकार द्वारा किये जा रहे इन योजनाओं के कारण ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है, सुरक्षित मातृत्व देखभाल मिल रही है और महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हो रहा है जिसके कारण उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हो रही है।

ग्रामीण भारत में महिलाओं को लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा आदि जैसे कई सामाजिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है। इन सामाजिक समस्याओं को खत्म करने और ग्रामीण महिलाओं के लिए अवसर विकसित करने के लिए महिला शिक्षा की आवश्यकता ताकि ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर बन सके, उनका सामाजिक सशक्तीकरण हो और वो अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो। वे बेहतर पोषण, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने में सक्षम बन सके। इसलिए सरकार ने ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के स्तर को सुधार के लिए अनेक योजनाएं चलाई हैं जैसेः– बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या योजना, बालिका समृद्धि योजना, उड़ान स्कीम, माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों के लिए प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना, सर्व शिक्षा अभियान, कस्तूरबा गांधी योजना और अनेक छात्रवृति योजनाएं चलाई गई हैं। इन योजनाओं के कारण ग्रामीण महिलाओं में निरंतर शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है और वे देश के विकास में अपना योगदान दे रही है।

आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तीकरण से संबंधित सरकारी योजनाएं

ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से कमजोर समझा जाता है, इनको मुख्यता घरेलू कार्यों एवं मजदूरी तक ही सीमित रखा जाता है। ग्रामीण महिलाओं के सम्मुख अनेक बाधक तत्व हैं जैसे वेतन भेदभाव, आर्थिक संसाधनों तक पहुंच की कमी, शिक्षा और कौशल का अभाव आदि जिनके कारण ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से कमजोर रह गई है। इन बाधक तत्वों को दूर करने के लिए सरकार ने कई योजनाएं चलाई हैं एवं कुछ महिला स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में सहायता कर रही हैं। ग्रामीण महिला श्रमिकों के उत्थान हेतु ई–श्रम पोर्टल, महिला किसान सम्मान योजना, दीनदयाल अन्त्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, प्रधानमंत्री जन–धन योजना, बेरोजगार भत्ता आदि योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के कारण ग्रामीण आर्थिक रूप से सबल हो रही है जिसके कारण इनमें आत्मविश्वास आ रहा है, इनके कारण जीवन स्तर में सुधार हो रहा है, पारिवारिक आय में सहयोग दे रही है, बच्चों को गुणवतापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य प्रदान कर पा रही है।

समाज में संतुलन और प्रतिनिधित्व सुनिश्चत करने में महिलाओं की भी राजनीतिक भागीदारी आवश्यक है। राजनीतिक भागीदारी के कारण ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के कई महत्वपूर्ण लाभ होते हैं। जो न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि समाज और समुदाय के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसेः– महिलाएं अपने अधिकारों और हितों के प्रति जागरूक होती हैं एवं उनमें कानूनों और सरकारी नीतियों

की समझ विकसित होती है। जब महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेती हैं तो समाज में लैंगिक समानता बनी रहती है एवं उनकी भागीदारी से स्थानीय समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इसलिए सरकार ने ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जैसेः– पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है, जिससे उनकी राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी बढ़े। स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है, जो उन्हें न केवल वित्तीय सहयोग देते हैं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता भी बढ़ाते हैं।

साहित्य समीक्षा

डॉ. राधिका गुप्ता ने अपनी पुस्तक में महिलाएं और ग्रामीण मुद्दे ओर रणनीतियां में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका उनके सामने आने वाले मुद्दे और उन्हें सशक्त बनाने की रणनीतियों पर चर्चा की है। डॉ. राधिका गुप्ता लिंग असमानता, शिक्षा और जानकारी की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच, आर्थिक संसाधनों की अनुपलब्धता आदि के ग्रामीण महिलाओं के लिए चुनौती माना है, डॉ. राधिका गुप्ता ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए महिलाओं में व्यावसायिकता लाकर, वित्तीय सहायता प्रदान करके एवं स्वयं सहायता समूह द्वारा उनकी स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

डॉ. सुषमा शर्मा ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए सरकार द्वारा लागू की गई विभिन्न योजनाओं का विश्लेषण किया हैं। डॉ. सुषमा शर्मा ने इस पुस्तक में महिलाओं की स्थिति उनकी आवश्यकताएं और सरकारी नीतियों का प्रभावी उपयोग कैसे किया जा सकता है। डॉ. सुषमा शर्मा ने ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का वर्णन करते हुए विभिन्न सरकारी योजनाओं का विस्तृत अध्ययन किया है, जैसेः– महिला स्वयं सहायता समूह, दीन दयाल अन्त्योदय योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना और पाया कि ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण केवल सरकारी योजनाओं का उपयोग करने से नहीं होगा, बल्कि इनको स्वयं भी आगे आना होगा। सुषमा शर्मा का यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सरकारी योजनाओं की जानकारी, संसाधनों की उपलब्धता और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

प्रोफेसर मनोज चोपड़ा ने ग्रामीण क्षेत्रों में लिंग और ग्रामीण विकास के बीच के संबंध को समझाया गया है। प्रोफेसर चोपड़ा ने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामने आने वाले लिंग असमानता के मुद्दों का विश्लेषण किया है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक अवसर और राजनीतिक भागीदारी जैसे विषय शामिल हैं। प्रोफेसर मनोज चोपड़ा ने विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का विवरण दिया गया है, जो लिंग समानता और महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए लागू की गई है। प्रोफेसर मनोज चोपड़ा कहना है कि लिंग समानता केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है।

डॉ. प्रिया वर्मा ने ग्रामीण महिलाओं के संदर्भ में खाद्य सुरक्षा को परिभाषित करते हुए उसका महत्व बताया है डॉ. प्रिया वर्मा ने महिलाओं की खाद्य उत्पादन, प्रबंधन और वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका को बताया है। डॉ. प्रिया वर्मा ने महिलाओं को खाद्य सुरक्षा में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है, जैसेः– आर्थिक असमानता, शिक्षा और जानकारी की कमी, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं आदि। प्रिया वर्मा ने विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों का अवलोकन किया है जो खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए लागू की गई हैं। डॉ. प्रिया वर्मा ने महिलाओं की स्थिति और उनके योगदान को समझने में सहायक है कि महिलाओं को सशक्त बनाकर ही खाद्य सुरक्षा के लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है।

डॉ. द्यौति बैनर्जी ने वैश्विक स्तर पर राजनीति में महिलाओं की भूमिका और उनके अधिकारों के मुद्दों पर प्रकाश डाला है। डॉ. द्यौति बैनर्जी ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, चुनौतियों और उनके सशक्तीकरण के विभिन्न पहलुओं को समग्रता का विश्लेषण किया है। बैनर्जी ने यह स्पष्ट किया है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी समाज की समग्र प्रगति के लिए आवश्यक है। उन्होंने विभिन्न देशों के उदाहरणों के माध्यम से दिखाया है कि जब महिलाएं निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होती हैं, तो यह नीति निर्माण और

सामाजिक सुधार में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। डॉ. द्यौति बैनर्जी ने सामाजिक मान्यताएं, पारिवारिक दबाव और शिक्षा की कमी आदि को महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधक कारक माना है।

नीलम सैनी ने भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका और स्थिति का विश्लेषण किया इन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता से लेकर आधुनिक समय तक की राजनीतिक गतिविधियों और उनके योगदान को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। सैनी ने पाम्परिक विचारधाराएं, लिंग भेदभाव और राजनीतिक जागररूकता की कमी जैसे मुद्दे भी उठाए हैं। सैनी ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए और अधिक लिंग–संवेदनशील नीतियां बनाने का सुझाव भी दिया है। साथ ही जागरूकता अभियानों, शिक्षा और सामुदायिक सहयोग के महत्व को भी बताया गया है।

चर्चा एवं सुझाव

ग्रामीण महिलाएं भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें अक्सर सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी नहीं होती हैं। वे जागरूकता की कमी के कारण वे कई लाभों से वंचित रह जाती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि उनके बीच सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए। ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता लाने का पहला कदम शिक्षा है विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें योजनाओं के बारे में जानकारी दी जा सकती है। जागरूकता लाने के लिए स्कूलों ओर कॉलेजों, गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जा सकता है। ग्रामीण महिलाएं सरकारी योजनाओं की अधिक से अधिक जानकारी हो तथा वे इन से अधिक से अधिक लाभान्वित हो सके इसके लिए सामुदायिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए स्थानीय स्तर पर सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए इसके अतिरिक्त स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं एकत्रित होकर योजनाओं की जानकारी दी जा सकती है। मीडिया एक शक्तिशाली उपकरण है जो जागरूकता फैलाने में मदद कर सकता है स्थानीय रेडियो और टीवी चैनल एवं सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप और अन्य प्लेटफार्मों के द्वारा जागरूकता अभियानों का संचालन किया जा सकता है।

निष्कर्ष

सरकार द्वारा ग्रामीण महिलाओं के विकास एवं सशक्तीकरण के लिए अनेको योजनाएं चलाई गई हैं ताकि ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सशक्तीकरण हो सके लेकिन सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ बहुत कम महिलाएं उठा पा रही है। इसलिए ग्रामीण महिलाओं में सरकारी योजनाओं के संबंध में जागरूकता लाने के लिए विभिन्न उपायों की आवश्यकता है जैसे शिक्षा, सामुदायिक कार्यक्रम, मीडिया और सरकारी अधिकारियों की भागीदारी से इस जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है। इन उपायों के माध्यम से हम महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं। और उन्हें उनके अधिकारों और अवसरों के प्रति जागरूक कर सकते हैं, इस प्रक्रिया में समग्र समुदाय की भागीदारी भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, ताकि सभी मिलकर एक सकारात्मक बदलाव ला सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राधिका गुप्ता, (2020), वुमन रूरल डेवलपमेंटः इश्यूज एंड स्ट्रेटेजीज
2. डॉ. सुषमा शर्मा, (2021), एम्पोवेर रूरल वुमनः ए स्टडी ऑफ गवर्मेंट स्कीमस
3. प्रोफेसर मनोज चोपड़ा,(2019), जेंडर एंड रूरल डेवलपमेंटः ए पॉलिसी पर्सपेक्टिव
4. डॉ. प्रिया वर्मा,(2019), फूड सिक्यूरिटी एंड वीमेनः अन एनालिसिस
5. द्यौति बनर्जी,(2019), वीमेन इन पॉलिटिक्सः ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव
6. डॉ. प्रिया वर्मा,(2019), जेंडर एंड पॉलिटिकल पार्टिसिपेश्नः ए स्टडी रूरल वीमेन इन इंडिया
7. डॉ. नीलम सैनी,(2005), वीमेन एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया
8. डॉ. राधिका गुप्ता,(2018), ग्रासरूटस वीमेन एंड पॉलिटिकल पार्टिसिपेश्न

❖◆❖